रामचरितमानस और आज की युवा पीढ़ी

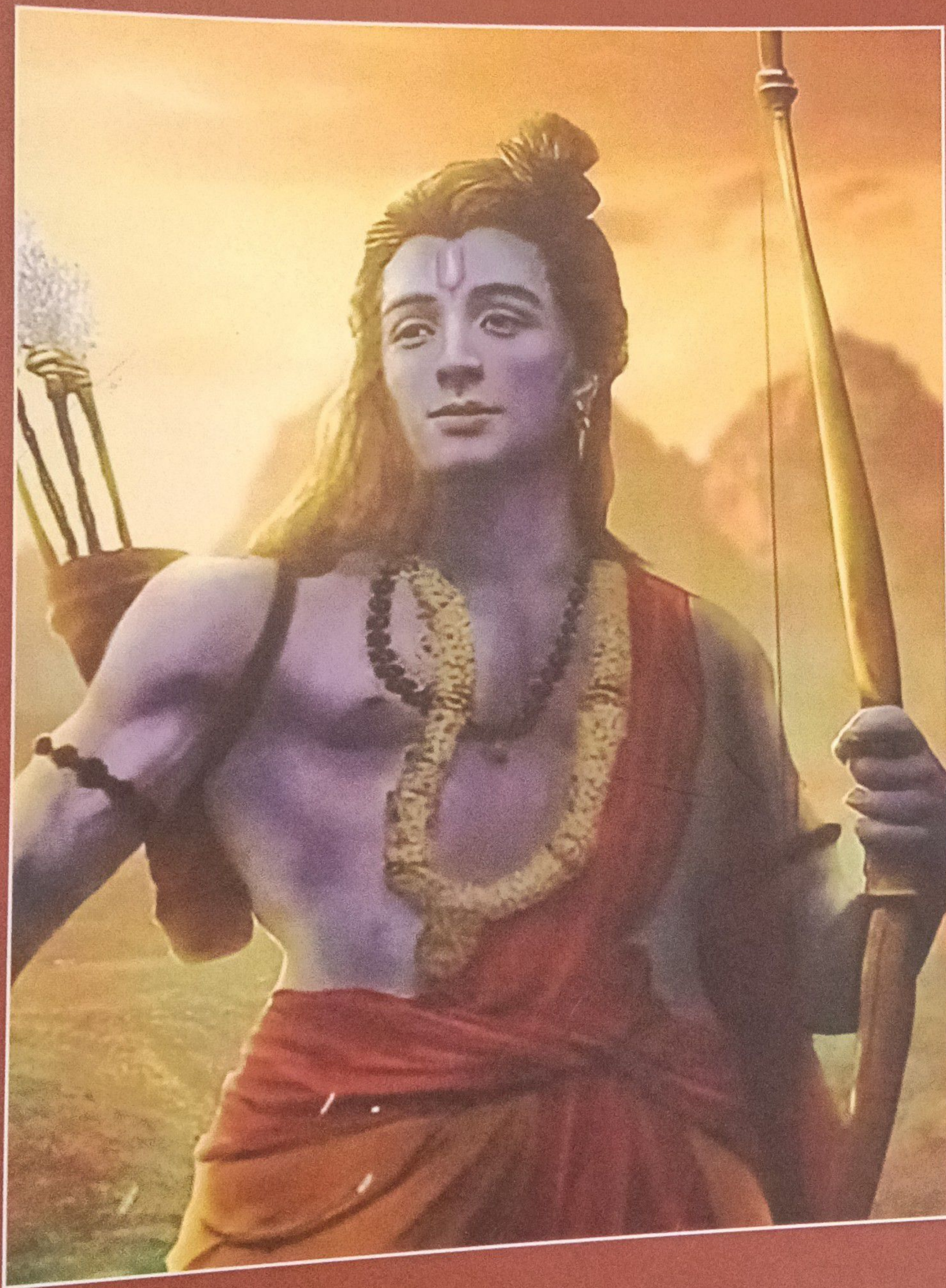

संपादक :

डॉ. मनोज कुमार सिंह • डॉ. हर्षलता वी. शाह

रामचरितमानस और आज की युवा पीढ़ी

संपादक: डॉ मनोज कुमार सिंह
डॉ हर्षलता वी शाह
हिंदी विभाग, शिफ्ट – 1
द्वारका दास गोवर्धन दास वैष्णव कॉलेज, चेन्नई – 600 106.

प्रकाशक

संस्कृति

45/83 कस्तुरी एवेन्यू

एम आर सी नगर

राजा अण्णामलईपुरम, चेन्नई – 600 028

दूरभाष: 9080088218

Email: merihindikitab@gmail.com

Website: www.pustaksanskriti.com

रामचरितमानस और आज की युवा पीढ़ी
संपादक: डॉ मनोज कुमार सिंह, डॉ हर्षलता वी शाह

RAMCHARITMANAS AUR AAJ KI YUVA PEEDHI
EDITOR: DR MANOJ KUMAR SINGH, DR HARSHALATA V SHAH

© सर्वाधिकार: सुरक्षित

आवरण चित्र: विवेक अग्रवाल

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार
प्रथम संस्करण: जनवरी 2024

International Seminar
FIRST EDITION: January 2024

ISBN. 978-81-960825-9-8

मूल्य: रु.300/-
PRICE: Rs.300/-

प्रकाशक:
संस्कृति
45/83, कस्तूरी एवेन्यू, एम्. आर. सी. नगर,
राजा अन्नामलईपुरम, चेन्नई – 600 028
दूरभाष: 90800 88218
Email: merihindikitab@gmail.com
Website: www.pustaksanskriti.com

मुद्रक – एस.आर. एन्टरप्राइजेस, चेन्नई

अनुक्रमणिका

शीर्षक – लेखक/ लेखिका – पृ.सं.

1.राजा का प्रजा के प्रति दायित्वः मानस के संदर्भ में
- डॉ. अजेय कुमार – 19

2.रामचरितमानस : दार्शनिक चिंतन के विविध आयाम
- डॉ. आनंद कुमार अजनोदिया – पृ.सं. – 25

3.श्रीरामचरितमानस में वर्णित अनपायनी-भक्ति और भारतीय जीवन-मूल्य - डॉ. घनश्याम सिंह – पृ.सं. – 30

4.रामचरितमानस में नारी सम्मान
- डॉ. प्रज्ञा शर्मा – पृ.सं. – 37

5.रामचरित मानस में काव्यांग विवेचन
- डॉ. दीपा वाडिया – पृ.सं. – 42

6.रामचरित मानस और तुलसी का समन्वयवाद
- डॉ. आशा एस नायर– पृ.सं. – 45

7.रामचरितमानस में राजधर्म
– डॉ. अर्चना त्रिपाठी – पृ.सं. – 50

8.मानस में चित्रित माता-पुत्र संबंध
- एम.एन.एस. जयंती – पृ.सं. – 54

9.मानस में वसुधैव कुटुंब की भावना
- डॉ. बी.कामकोटी – पृ.सं. – 59

10.रामचरित मानस में विश्व बन्धुत्व की भावन
- डॉ. के.एस. प्रणतार्तिहरन – पृ.सं. – 63

11.तुलसीदास के रामचरितमानस में पर्यावरण
- डॉ. एस्. प्रीतिलता – पृ.सं. – 65

12.रामचरितमानस में मिथक की अवधारणा
- डॉ. रोहिणी पांडियन – पृ.सं. – 68

13.रामचरितमानस में सामाजिक चेतना-पारिवारिक चेतना के संदर्भ में
डॉ. एन. सेल्वराज – पृ.सं. – 73

14.राजा का प्रजा के प्रति कर्तव्य मानस के संदर्भ में
- डॉ. अनिता पाटिल – पृ.सं. – 77

15.रामचरित मानस और रामराज्य का प्रजातंत्र
- डॉ. सुधा त्रिवेदी – पृ.सं. – 83

16.रामचरितमानस में राम का राममय रूप
- डॉ. सविता धुड़केवार – पृ.सं. – 89

17.रामचरितमानस और आदर्श नारी चरित्र
- डॉ. डॉली – पृ. सं. – 94

18.भारतीय ज्ञान परंपरा और राम
- डॉ. के. प्रिया नायडू – पृ.सं. – 104

19.तुलसी का रामराज्य
- डॉ. बी. संतोषी कुमारी – पृ.सं. – 109

20.रामचरितमानस में चित्रित आदर्शवाद
- डॉ. लावण्या एन. – पृ.सं. – 115

21.मानस में गरुड़जी के सात प्रश्न तथा काकभुशुण्डि के उत्तर
- रामकथा की महिमा - डॉ. वी. गीता मालिनी – पृ.सं. – 119

22.मानस में वर्णित सांस्कृतिक मूल्य
- डॉ. वी. ईश्वरी – पृ.सं. – 124

23.रामचरितमानस की बाल – लीलाओं में निर्गुण ब्रह्म –भाव
- डॉ.कुमार अभिषेक – पृ.सं. – 127

24.रामचरितमानस में लोकतंत्र
- डॉ. मधु विनय – पृ.सं. – 134

25.'मानस' में सूक्तियाँ'
- डॉ. आर. गोपालकृष्णन – पृ.सं. – 141

26.राम चरित मानस के सामाजिक परिवेश में नारी की स्थिति
- डॉ. मिथलेश सिंह – पृ.सं. – 144

27.रामचरितमानस में भारतीय जीवन मूल्य
- डॉ. ए. परवीन – पृ.सं. – 149

28.रामचरित मानस और आज का युवा वर्ग
- डॉ. रविता भाटिया – पृ.सं. – 152

29.इक्कीसवीं शताब्दी की वैश्विक समस्याएँ और तुलसीदास
- डॉ.पी. आर.वासुदेवन 'शेष' – पृ.सं. – 157

30.रामचरितमानस में चित्रित नैतिक मूल्य
- डॉ. के. आनंदी – पृ.सं. – 161

31.खल परिहास होइ हित मोरा
- डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा – पृ.सं. – 165

32.सीता - एक आदर्श नारी का स्वरुप
- डॉ. डी. जयभारती – पृ.सं. – 167

33.रामचरितमानस के सुंदरकांड: आज की युवापीढ़ी के लिए गुरुमंत्र
- डॉ. वी. जयलक्ष्मी – पृ.सं. – 171

34.राम के चरित्र में आधुनिकता बोध
- डॉ. एस. कल्याणी – पृ.सं. – 177

35.आधुनिक युग में रामचरितमानस की प्रासंगिकता
- डॉ. कविता आर. – पृ.सं. – 181

36.रामचरितमानस और जीवन मूल्य
- डॉ. महालक्ष्मी के – पृ.सं. – 185

37.राम के चरित्र में आधुनिकता
- डॉ. निशा मुरलीधरन – पृ.सं. – 191

38.तुलसीदास के रामचरितमानस में उर्मिला के योगदान का
- एक साहित्यिक विश्लेषण - डॉ. के प्रिया – पृ.सं. – 196

39.रामचरितमानस और तुलसीदास का समन्वयवाद
- डॉ. राजालक्ष्मी एस. – पृ.सं. – 201

40.तुलसी का सामाजिक दृष्टिकोण –"मानस" के संदर्भ में
- एक वैज्ञानिक अन्वेषण - डॉ. सरोज सिंह – पृ.सं. – 207

41.रामचरित मानस और भारतीय जीवन मूल्य
- डॉ. सय्यद आरिफुल्ला – पृ.सं. – 214

42.रामचरितमानस और आज का समाज
- डॉ. शाजिया फरहाना. आई. – पृ.सं – 217

43.अयोध्याकाण्ड मे चित्रित पारिवारिक मुल्य
- डॉ. आर. एन. शीला – पृ.सं. – 222

44.मानस में चित्रित माता–पुत्र संबंध
- डॉ.सुमित्रा देवी – पृ.सं. – 226

45.रामचरितमानस में हनुमान की भक्ति : एक पवित्र बंधन
- डॉ. पी.बी.वनिता – पृ.सं. – 228

46.'सीता' एक आदर्श नारी का स्वरूप
- डॉ. एस. विजया – पृ.सं. – 235

47.रामचरितमानस में चित्रित सार्वभौम मूल्य
- वी. अमुदा – पृ.सं. – 240

48.रामचरितमानस :- श्रीराम के आदर्श पुत्र के स्वरूप
- आर. दीपक चंद – पृ.सं. – 245

49.श्रीरामचरितमानस में माया के प्रभाव का निरूपण
- पूजा पाराशर – पृ.सं. – 248

50.रामचरित मानस और आज का समाज
- साईमीरा जोशी – पृ.सं. – 254

51.मानस में चित्रित गुरु और शिष्य संबंध
- एस. प्रसन्ना देवी – पृ.सं. – 258

52.राम चरित मानस की विचार भूमि - लोक और शास्त्र
- रेखा कुमारी – पृ.सं. – 262

53.श्री राम चरित मानस में रामराज्य : एक आदर्श और आधुनिकता का विश्व
- डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी – पृ.सं. – 268

54.'रामचरितमानस' में वर्णित धर्म और समाज
- डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र – पृ.सं. – 273

55.रामचरितमानस में चित्रित भरत का भातृ प्रेम

- डॉ. एस मुत्तु कुमार – पृ.सं. – 278

56. रामचरितमानस और आज की युवा पीढ़ी

- कशिश मिश्रा के – पृ.सं. – 280

57.मानस का उद्देश्य - मानवता की स्थापना तुलसीदास और रामचरितमानस के संदर्भ - प्रेमलता जांगिड़ एन. – पृ.सं. – 282

58.रामचरितमानस और वर्त्तमान जीवन में उसकी दार्शनिक प्रासंगिकता

- अमृतवर्षिनी वि – पृ.सं. – 284

59.रामचरित मानस में नेतृत्व और प्रबंधकीय शिक्षा नाम

- आर. खुशी कृष्णवेणी – पृ.सं. – 287

60.रामचरितमानस में वर्णित सांस्कृतिक मूल्य

- प्रीती कुमारी – पृ.सं. – 289

61.श्री रामचरित्तमानस: समाज का दर्पण

- गरिमा एस. – पृ.सं. – 292

62.भरत का भातृ प्रेम

- हर्ष हेच. दवे – पृ.सं. – 294

रामचरितमानस में चित्रित सार्वभौम मूल्य

वी. अमुधा
शोधार्थी, वेल्स विश्वविद्यालय, चेन्नई

तुलसी साहित्य निश्चित्त ही विश्व साहित्य में अपना स्थान रखता है। भारतीय सनातन धर्म के अवतार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के पावन चरित्र का अंकन तुलसी ने जाति, धर्म, संप्रदाय, देश, काल आदि के ऊपर उठकर मानवीय धरातल पर किया है। रामचरितमानस के सार्वभौम मूल्यों से तात्पर्य उन विशिष्ट तत्वों से है, जो मानवमात्र के लिए हितकारी हैं। सार्वभौम मूल्य विश्वव्यापी मानवीय धर्म हैं, जो जातिधर्म, सम्प्रदायधर्म, देशधर्म और कालधर्म से ऊपर उठे हुए हैं। रामचरितमानस के विशिष्ट संवाद, प्रसंग, उत्तरकांड के कथानकों और विनयपत्रिका आदि में तुलसी के सार्वभौम मूल्यों का निरूपण(व्यष्टिगत एवं समष्टिगत) दोनों ही रूपों में हुआ है।

रामचरितमानस में निहित सामाजिक व नैतिक मूल्यों के आधार पर ही जीवन को विकसित करना चाहिए। मानवीय मूल्यों आज्ञापालन, त्याग, बलिदान, धर्म का पालन, वचन का पालन, बड़ों की आज्ञा का पालन आदि कर्तव्यों का निर्वतन करना चाहिए।

परिवर्तन मानवीय प्रकृति है। समय के साथ-साथ पीढ़ी दर पीढ़ी, सभ्यता का बदलाव, राजनैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन, होता ही है। अतः नैतिकता की परिभाषा में बदलाव सहज, स्वाभाविक है। वे नैतिक मूल्य जो समाज के बहुसंख्यक वर्ग के लिये अनुकरणीय हों, ग्राह्य हों, उदाहरण स्वरूप रखे जा सकें, वे नैतिक आदर्श कहे जा सकते हैं। ऐसे आदर्श, अपेक्षाकृत स्थायी, शाश्वत, और स्थापित मान्यता के प्रतिमान स्वरूप होते हैं। ऐसे आदर्श किसी भी समाज में स्वभावगत रूप से अपनाये जाते हैं, और सहज स्वीकार्य होते हैं।

उदाहरण स्वरूप बुजुर्गों का सम्मान, माता पिता की आज्ञा का पालन, बच्चों को प्यार, महिलाओं का सम्मान, गुरू की इज्जत करना, भाई को स्नेह करना, मित्र का आदर, शरण में आये हुये व्यक्ति की रक्षा करना, गरीबों की सहायता, पतितों का उद्धार, अनैतिक, अमर्यादित आचरण करने वाले को कठोर दण्ड देना, राजनैतिक मर्यादा का पालन, लोकतांत्रिक भावना का अनुपालन, सच की प्रतिष्ठा, आदि ऐसी नैतिकता है जिसे कोई भी सभ्यता अपनाना चाहेगी।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने जब मानस की रचना की थी, तब भारतीय समाज विदेशी आक्रांताओं के दबाव में एवं अशिक्षा, रूढ़ियों एवं कुरीतियों के चलते नैतिक रूप से छिन्न हो रहा था, अतः गोस्वामी जी ने धर्म एवं लोकभाषा का सहारा लेकर हमारे नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में एक बहुत बड़े समाज सुधारक की भूमिका का निर्वहन किया। उन्होंने राम कथा को इस दृष्टि से अभिव्यक्त किया।

कोई एक पुस्तक किस सीमा तक समाज के नैतिक मूल्यों को प्रभावित कर सकती है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण राम चरित मानस है। जब सूरीनाम, मारीशस आदि देशों में भारतीय मजदूर विस्थापित हुये तो उनके साथ मानस भी गई और यह मानस में वर्णित नैतिक आदर्शों का ही प्रभाव है कि उन देशों की वर्तमान पीढियां आज भी भारतीय संस्कृति से साम्य रखती हैं। राम कथा के नैतिक आदर्शों का अनुकरण ही उन्हें भारत के निकट बनाये हुये है।

मानस कथा के समय में न तो कोई लिखित कानून थे, न कोई वकील थे न कोई आयोग थे। राजा ही न्यायाधीश की भूमिका निभाता था। सेना ही पुलिस और सरकारी वकील की भूमिका में कार्य करती थी। सच तो यह है कि शाश्वत नैतिकता मनुष्य का प्राकृतिक गुण है। हम इस गुण को आरोपित सामाजिक स्थितियों के अनुरूप बढ़ाने या घटाने पर विवश हो जाते हैं। आज एक सामान्य आरोप है कि नई पीढ़ी के नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है पर मैं मानता हूं कि हम सब में आज भी नैतिक भावना विद्यमान है और वह सदैव रहेगी क्योंकि वह नैसर्गिक गुण है।

क्या हम बिना किसी दबाव के प्रतिदिन ईश्वरीय प्रार्थना करते हैं या नहीं? हो सकता है यह प्रार्थना व्यक्तिगत भौतिक सुखों की कामना के साथ हो, या वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से सर्वे सन्तु निरामया: की प्रार्थना हो, पर यह हमारी नैतिक प्रबलता ही है, कि हम प्रार्थना करते हैं, ईश्वरीय शक्ति के सम्मुख हम नतमस्तक होते हैं, मतलब हममें नैतिकता के बीज विद्यमान हैं, और उन्हें पुष्पित पल्लवित किया जा सकता है।

जो नास्तिक हैं वे भी, जब कोई गैर कानूनी कार्य करते हैं, तो क्षण भर को ही सही पर यदि कानून तोडऩे से पहले या बाद में उन्हें यह अहसास होता है कि उन्होंने कुछ गलत किया है। तो स्पष्ट है कि उनमें नैतिकता के बीज विद्यमान है। समाज की आरोपित व्यवस्था के चलते हमारे अंदर अंतर्निहित नैतिकता मर रही है। अत: आज आवश्यकता है कि ऐसा राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण बनाया जावे कि आम आदमी अनैतिक कार्य करने से बच सके। जो नैतिकता का पालन करे, वह उपहास का पात्र न बने। जो सेलिब्रिटिज हैं, वे नैतिक आदर्श बनें। मानस का प्रारंभ ही गोस्वामी जी ने विनय वत होकर वंदना यहां तक कि खल वन्दना से किया है। विनय भाव नैतिकता का बीजमंत्र है।

राजा दशरथ, श्रीराम, राजा जनक, राज संभाले हुये भरत जी द्वारा राजगुरूओं का सम्मान किया जाना, विद्वानों के आदेशों का पालन उनकी सलाह को व्यवस्था के संचालन में महत्व दिये जाने के नैतिक आदर्शों के उदाहरण हैं। आज के राज नेताओं की उच्छृंखलता के सर्वथा विपरीत अनुकरणीय उदाहरण हैं। रावण ने इस

नैतिकता की अवहेलना की और उसका प्रभाव हुआ, यह भी मानस में देखने को मिलता है। माता पिता देवतुल्य होते हैं। उनका इच्छाओं को शिरोधार्य करने की नैतिकता प्रत्येक में हो तो हरेक का जीवन सुखमय होगा, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति पुत्र भी है, और पिता भी। राम इस नैतिक आदर्श के प्रतीक हैं।

पत्नी-पति की अनुगामिनी हो। यह आदर्श भगवती सीता, उर्मिला के चरित्रों में प्रतिपादित होता है। भाई-भाई में विषय विशेष पर मतभेद होना स्वाभाविक है, राम लक्ष्मण में भी अनेक प्रसंगों में मतभेद हुए, जैसे समुद्र के सम्मुख याचना करना लक्ष्मण को बिल्कुल पसंद नहीं था पर लक्ष्मण का सेवा भाव, मर्यादा सदैव विजित हुई और आदर्श भ्रातृ प्रेम का उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया।

मानस का प्रत्येक प्रसंग ही ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है और मानस का अवगाहन ही हमें इन आदर्शों का अनिर्वचनीय आनन्द व अनुकरण की प्रेरणा, दे सकता है। नैतिकता किसी शिक्षा की मोहताज नहीं है। वह स्फुरण का सामाजिक वातावरण चाहती है जो आज समय की आवश्यकता है।

सार्भौम मूल्य और उनकी सैद्धांतिक व्याख्या

सार्भौम मूल्य का तात्पर्य

काव्य में लोक-मंगल की भावना को प्रमुख मानना कवि कर्म का मुख्य प्रयोजन रहा है। लोकमंगल की साधना काव्य का बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रयोजन मूल्य माना जाता है।

काव्य की प्रयोजन

आदि कवि वाल्मीकि के महाकाव्य की यह विशेषता बताई गई है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्षारूपी गुणों से युक्त है, वह इनका प्रतिपादन एवं दान करने वाला है। इस महाकाव्य का गान करने से पूर्व कुश-लव स्पष्ट कहते हैं कि इस काव्य द्वारा चतुर्वर्ग-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की स्थिति होती है-

तदिदं वर्तमिषयवः सर्व निखिलभादितः।

धर्म कामार्थ सहितं श्रोतव्यमनसूयता।

इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने सहज भाव से लोक-रंजन हिताय काव्य का सृजन करके उसमे लोक-मंगल की स्थापना कर दी।

हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम लोक मंगल की दिशा में गोस्वामी तुलसीदास ने विचार व्यक्त किए।

लोक मंगल पर बल देते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है– **मंगल करनि, कलमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।**

काव्य के समस्त प्रयोजन समाज सापेक्ष हैं। काव्य-शास्त्र आचार्यों न काव्य के प्रयोजन यश, अर्थ, व्यवहार-ज्ञान, आनंद, उपदेश, श्रमित को शान्ति प्रदान करना आदि बताए हैं। किसी भी प्रयोजन को हम समाज से पृथक नहीं कर सकते।

पं. रामचंद्र शुक्ल ने काव्य मंगल पर विचार करते हुए लिखा है कि **भावों की छानबीन करने पर मंगल का विधान करने वाले दो भाव ठहरते हैं - करुणा और प्रेम। करुणा की गति रक्षा की ओर होती है और प्रेम की रंजन की ओर। लोक में प्रथम साध्य रक्षा है। रंजन का अवसर पीछे आता है। अतः साधनावस्था या प्रयत्न-पक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों का बीज भाव 'करुणा' ही ठहरता है।**

जीवन मूल्यों के स्रोत एवं उनका वर्गीकरण

विशिष्ट परिस्थितियाँ विशिष्ट जीवन मूल्यों के निर्माण में सहायक रहता है। मूल्यों का विभाजन अनेक आधारों पर किया गया है।

सुविधा की दृष्टि से मूल्यों का वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है -

1. वैयक्तिक मूल्यः- ये मूल्य सांस्कृतिक विघटन का परिणाम होते हैं। ऐसी स्थिति में सांस्कृतिक मूल्यों का स्वर समाप्त हो जाता है और भौतिक मूल्य ही प्रमुख होने लगते हैं। यह प्रवृत्ति निषेधात्मक मूल्यों का जन्म देती है।

2. समष्टिगत मूल्यः- इन मूल्यों की स्थापना व्यक्तिवाद अथवा व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों के उपरांत ही संभव है। राष्ट्र-प्रेम, समाज-प्रेम, मानवता, अहिंसा, दवा, त्याग, क्रांति और समन्वय की अभिवृत्ति से उत्पन्न मूल्य इसी वर्ग के अंतर्गत आते हैं।

3. आध्यात्मिक मूल्यः- धर्म और मोक्ष सम्भन्धी मूल्य इसी कोटी के अंतर्गत आते हैं। इनके अंतर्गत सत्य, शिव और सुन्दर की प्रतिष्ठा सामूहिक रूप में अंगी रूप में की जाती है।

4. भौतिक मूल्यः- साधन-मूल्य इसी के अंतर्गत आते हैं। "उपयोगिता और अधिकार प्राप्ति के साधन ही भौतिक मूल्य है।"अर्थ, काम, पद और यश की अभिवृत्तियाँ भौतिक मूल्य ही हैं ।

5. नैतिक मूल्यः- नीति शब्द से नैतिक शब्द बना है। समाज, धर्म और राष्ट्र द्वारा निर्मित नियमों के अनुकूल आचरण ही नीति है और इन नियमों के अनुकूल मनोवृतियों से संभंधित मूल्य ही नैतिक मूल्य हैं।

6. सौंदर्य मूल्यः- सौंदर्य-मूल्य भौगोलिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों द्वारा निर्मित होते हैं। नैतिकता भी सौन्दर्य-मूल्य के निर्माण में सहायक होते हैं। सौंदर्य

मूल्य में वैयक्तिकता का समावेश रहता है। प्रकृति-चित्रण, मानवीय सौंदर्य और अन्तः सौंदर्य-चित्रण इसके अंतर्गत आते हैं।

सार्भौम मूल्य और उनका उपयोग

मानवीय प्रकृति अपनी अभिवृत्तियाँ, अपने आदर्श तथा 'नार्मस' द्वारा ही अपना स्वरूप धारण करती है। साहित्य में इन्हीं का चित्रण होता है। इस विवेचन को गति प्रदान करते हुए डॉ धर्मवीर भारती ने लिखा है कि "साहित्य में मूल्यगत मर्यादा के विकास की सहज प्रवृत्ति सदैव ही दायित्व के समन्वय को मान्यता प्रदान करती रही है। यह न केवल आधुनिक वरन मध्यकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियों से भी प्रमाणित होता है।

निष्कर्षतः मूल्य अवधारणा है जो विशुद्ध वैचारिक धरताल पर अपनाव की एक सूक्ष्म तथा जटिल प्रक्रिया के लिए अवस्थित है। इस प्रक्रिया का सीधा सम्बन्ध मानव के संग्रथित परिवेश के साथ ही उसकी आतंरिक वास्तविकता से अधिक है। इसी कारण मूल्य के बोध एवं उसके निर्धारण का परिप्रेक्ष्य सदैव व्यक्ति स्तरीय ही प्रस्थापित होता है।

- - - - - - - - - -